फिलीपाइन द्वीप मे राष्ट्रवादी आंदोलन
Nationalist Movement in phillipines.

Ashish kumar Thakur
B.A.II, History (H), paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

फिलीप्पीन द्वीप समुह पर यूरोपीय शक्तियों मे सबसे पहले स्पेन ने अपना आधिपत्य स्थापित किया, परन्तु बाद मे वहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका का अधिपत्य स्थापित्य हुआ।

[1] फिलीप्पीन पर जापान की विजय और स्वतंत्रता संग्राम :-

1942 में जब जापान ने वहाँ अधिकार किया तो वैध शासन विद्यमान था। मानुं-आल-क्योजोन वहाँ का राष्ट्रपति था और ओस्समेना उपराष्ट्रपति। वहाँ की पार्लियामेंट का भी संगठन किया गया था। फिलीपाइन की यह लोकतंत्रीय सरकार आंशिक रूप से स्वतंत्र अवश्य था परन्तु फिर भी अमेरिका का उस पर पर्याप्त प्रभाव था। फिलीप्पीन के स्वतंत्रता प्रेमी देशभक्त इससे असंतुष्ट थे। जापान के विजय के फलस्वरूप फिलिप्पीन के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति को स्वदेश छोड़कर अमेरिका भागना पड़ा, परन्तु फिलीपाइन मे कुछ ऐसा देशभक्त भी थे जो जापान की विजय को अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए सुनहरा अवसर समझते थे। उनका विचार था कि अमेरिका की पराजय से उन्हे स्वाधीन होने का जो अवसर प्राप्त हुआ है उसका अवश्य ही उपयोग किया जाना चाहिए।

इसके साथ ही फिलिपाइन मे एक ऐसा दल भी था, जो जापान के सहयोग को अनुचित समझता था। यह हुक्-बली-हुप (जनता की सेना) कहलाता था। इस दल के लारेन की सरकार का विरोध किया और उसे उच्च रेव की सरकार कहा। हुक-बली-हुप दल का झुकाव साम्यवाद की ओर था और इस कारण उसने लारेन की सरकार का विरोध किया।

[2]. फिलीप्पीन पर अमेरिका का पुनः अधिकार और फिलीप्पीन की स्वतन्त्रता :-

oct 1944 मे अमेरिकन सेनाओं ने फिलिप्पीन पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया था। और जनवरी 1945 तक प्रायः सभी फिलीप्पीन द्वीप अमेरिकन सेनाओं के कब्जे मे आ गये थे। इस दशा मे प्रवासी फिलिप्पीन सरकार अमेरिका से अपने देश को वापस आ गई। क्योंकि, इस बीच मे राष्ट्रपति क्वेजोन की अमेरिका मे मृत्यु हो गई थी अत! ओसमेना ने राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर लिया था। 27 फरवरी, 1945 को ओस्समेना ने अपने सम्मर्थ-

राजकर्मचारियों के साथ फिलिपाइन चले आने पर शासन-सूत्र को अपने हाथों में ले लिया।
अब ओस्मेना ने इस बात का प्रयास किया कि वहाँ की आंतरिक स्थिति को सुदृढ़ बनाए और अमेरिका से इस प्रकार का समझौता रखा जाय कि राष्ट्रवादी देशभक्तों को शिकायत का अवसर न मिले। जब फिलीपाइन पर अमेरिका सेनाओं ने कब्जा किया तो लारेल और उसके साथी जापान चले गए थे।
जापान के आत्मसमर्पण के बाद उन्हें फिलिप्पीन लाया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया। परन्तु उनमें अनेक ऐसे प्रभावशाली और सम्पन्न व्यक्ति भी थे जिन्हें दण्ड दे सकना सम्भव नहीं था।

1945 के बाद फिलिपाइन में हुक-बली-हुप दल निरन्तर प्रबल होता गया और फिलिपाइन की सरकार ने इस दल को कुचलने का प्रयास किया।
जिसके परिणाम स्वरूप 1949 में उनमें भीषण संघर्ष हुए। जो भी हो, द्वितीय महायुद्ध के बाद अमेरिका ने फिलिपाइन को स्वतंत्रता प्रदान कर दी। परन्तु फिर भी यहाँ से अमेरिका प्रभाव का अंत नहीं हो पाया। 1956 में अमेरिकन कांग्रेस ने फिलिपाइन के लिए ट्रेड एक्ट स्वीकृत किया जिससे यहाँ अमेरिका का आर्थिक प्रभुत्व कायम रहा और अमेरिकनों ने यह भी जिम्मेदारी ली।
वह भविष्य में विदेशी आक्रमणों से फिलीप्पीन की रक्षा करेगा। इस कारण उसने वहाँ अनेक स्थानों पर सैनिक केन्द्र कायम करने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

Scanned with CamScanner